ॐ



श्री राज्ञास्तुति

विरचिता

पुज्य पाद श्री स्वामी व्यध्याधर जी

सम्पादक तथा प्रकाशक :

सेवक श्री गोपी नाथ सपरू "मदन" काशमीरी

भानु मुहल्ला, श्री नगर, काशमीर।

प्रथम बार १००० सर्वाधिकार सुरक्षित। मूल्य १० पैसे

अस्तु मा अमृतं गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।

देवी दर्शनूकूय प्रताप दि न्यत्रन्
गुण राग पनुन दिम करनन्
च्यानी नाम वली च्यतम गच्छू थवुन्
पादन अथव सीव करुन् ।
वानी पूज़ तोतायि हन्ज़ दिम सता
गच्छू ग्वन तू कीर्तन करुन्
यथ यथ जायि उपासन भगवति
आसी गच्छय वुय करुन् ॥२८-२॥ (सपरू)

❀ ॐ नमः श्री जगदम्बायै ❀

ॐ विश्वेश्वरी निखिल देव महर्षि पूज्या,
सिंहासना त्रिनयना भुजगोपवीता।
शङ्खाम्बुजास्यऽमृत कुम्भक पञ्च शाखा,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१॥

❀ भाष ❀

जगत ईश्वरी छि यसदीव यर्ष सारी पूज़ान्,
सूह आसनस सरूप नाल्य त्र्यन्यत्रछय दारान्।
अथि छुस खडग अमृत नूट शङ्ख पदम आसान्,
राज्ञा ह्रदय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठय ॥१॥

जन्माटवीप्रदहने दववह्नि भूता,
तत्पाद पङ्कजरजोगत चेतसां या।
श्रेयोव्रतां सुकृतिनां भवपाश भेत्त्री,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥२॥

* भाष *

इमज़न चरण छि अमि सून्दि मनि मञ्ज़ दारान्,
ज़न्म वन वनिथ अग्नी छख लादि ज़ालान्।
भक्तयन इमन युसू वन्दन संसार चटान्।
राज्ञा द्रह्य भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठय॥२॥

देव्या ययाऽनुज राक्षसदुष्टचेतो,
न्यग्भावितं चरणनूपुरशिञ्जितेन ।
इन्द्रादिदेवहृदयं प्रविकासयन्ती,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥३॥

* भाष *

यमि दीविये असुर दानव दुष्ट महान् ,
रूवि पादनूय तल रटिथ श्वचि युस सपनान् ।
इन्द्राज़ व्ययि ति दीवन हृदयस सु फ्वलवान् ,
राज्ञा द्वहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठय ॥३॥

दुःखार्णवे हि पतितं शरणागतं या,
चोद्धृत्य सा नयति धाम परं दयाब्धि ।
विष्णुर्गजेन्द्रमिव भीत भयापहर्त्री,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥४॥

* भाष *

शरनागतन तू ष्यमूत्यन यूस दुःख छु आसान् ,
सुय दुःखकरानछ्य मनि दूर ग्वुक्ती छि दिवान ।
भय मन्ज़ रछान युथ रछान हस्त व्यष्ण भगवान ,
राज्ञी छहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठय ॥४॥

यस्या विचित्रमखिलं हि जगत्प्रपञ्चं,
कुक्षौ विलीनमपि सृष्टिविसृष्टिरूपात्।
आविर्भवत्यविरतं चिदचित्स्वभावं,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥५॥

* भाष *

युस् सोर ज़गत रंगू रंगू स्थावर ज़ंगम रूप,
तस मन्ज़ बनिथ सू आसान उत्पत प्रलय रूप।
व्यथि सुय तिथूय छु नेरान युद ओस प्रलय रूप,
राज्ञा द्रहय भगवती रुज़िन प्रसन्न पाठय ॥५॥

यत्पादपङ्कजरजःकणज प्रसादा,
योगीश्वरैर्विगतकल्मषमानसैस्तत् ।
प्राप्तं पदं जनिविनाशहरं परं सा,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥६॥

* भाष *

यमि सून्ज़ि पादगर्दि सूत्य योगी श्वरव मन ,
मल तथ छुलुख अदू च्हयुनुख ज्योन मरन बन्धन ।
प्रसाद क्न्योख परम धाम प्रोवुख छि रोज़ान् ,
राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ।

यत्पादपङ्कजरजांसि मनोमलानि,

संमार्जयन्ति शिवविष्णुविरिञ्चि देवैः ।

मृग्यान्यऽपश्चिमतनोः प्रणुतानि माता,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥७॥

* भाष *

यमि सून्ज़ि पाद गर्दि सूत्य मन मल छु हारान् ,

ब्रह्मा विष्णु तू शिव छी तिम पाद च्छारान् ।

पाश्चात जन्म पुरष छी माता च्य नमान् ,

राज्ञा दूहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥७॥

यद्दर्शनामृतनदी महदोघयुक्ता,

संप्लावयत्यखिलभेदगुहास्वऽनन्ता ।

तृष्णाहरा सुकृतिनां भवतापहर्त्री,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥८॥

* भाष *

अमृत वानि वरिथूय दर्शन नदी स्वय:

स्वय छय अनन्त चिन-भाव ग्वफूनूय छय पूर सुय ।

सन्ताप त्रेष चट्टवूनि सत पुरुषनय स्वय,

राज्ञा छहय भगवतो रूाज़न प्रसन्न पाठ्य ।।८।।

यत्पादचिन्तन दिवाकररश्मिमाला,
चान्तर्बहिष्करणवर्गसरोजषण्डम् ।
ज्ञानोदये सति विकास्य तमोपहर्त्री,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥६॥

* भाष *

जूचू सूर्य सून्ज़् हिषमाल सुमरन छि यस पाद,
अन्ताहकर्ण-बह्यषकर्ण पम्पोष डल पाद।
वुज़वान छय ज्ञान फ़ूलवान गटकार चटान पाद,
राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥६॥

हंसस्थिता सकल शब्दमयी भवानी,

वाग्वादिनी हृदय पुष्कर चारिणीया।

हंसीव हंस रजनीश्वर वह्निनेत्रा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥७॥

* भाष *

हंसस खसिथ सकल शब्दमयी भवानी,

हृदयि कमलसूय मन्ज़ वसान स्वय वाकवानी।

सूर्य चन्द्र अग्नि न्यत्रव स्वय हंसानी,

राज्ञा द्वहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥७॥

यासोम सूर्य वपुषा सततं सरन्ती,
मूलाश्रयात्तडिदिवाऽऽविधिरन्ध्रमीद्या ।
मध्यास्थता सकल नाडिसमूह पूर्णा,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥८॥

* भाप *

सूर्यचन्द्र रूप हिपज़न व्वथितूय छय फेरान् ,
मूलाधार प्यठ़ ब्रह ब्रह्मरन्द्रस तान् ।
मन्ज़भाग त्रिहि छय सारिनूय नाडियन स्व पूरान् ,
राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥८॥

चैतन्य पूरित समस्त जगद्विचित्रा,
मातृ प्रमेयपरिमाणतया चकास्ति ।
या पूर्णवृत्त्यर्हामति स्वपदाधिरूढा,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥६॥

* भाष *

चैतन्य ज़गत युसु छु ज़न रंगू रंगू वनानी,
ज़ान ज़ानवुन तू ज़ाननी त्रयि किन्य त्रज़ानी ।
यस पूर्ण भाव अहं पद पत्नुय थवानी,
राज्ञी द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥६॥

या चित्क्रमक्रमतया प्रविभाति नित्या,
स्वातन्त्र्य शक्तिरमला गतभेद भावा ।
स्वात्मस्वरूपसुविमर्शपरैः सुगम्या,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१०॥

* भाष *

कर्म-अकर्म च्यत शक्त युस् द्रह छय बासान् ,
विन भाव क्रिन्य स्व निर्मल सुतन्त्रभाव सान ।
इम आत्म च्यनतन करान तिम छी लबान थान् ,
राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥१०॥

याकृत्य पञ्चकनिभालनलालसैस्तैः,

सन्दृश्यते निखिल वेद्यगतापि शश्वत् ।

सान्तर्धृता परप्रमातृपदं विशन्ती,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥११॥

* भाष *

इम छी लगिथ व्यमर्शस मन्ज़ पञ्चकृतूकिस् ,

प्रथ कुनि मनज़ वुछान छिस प्रथ कुनि वुछान छिस् ।

हुष्यार छय पद रटिथ स्वय शक्ति छय गुण छिस,

राज्ञा द्रहय भगवती रुज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥११॥

याऽनुत्तरात्मनि पदे परमाऽमृताब्धौ,
स्वातन्त्र्यशक्ति लहरिविवहैः सरन्ती ।
संलीयते स्वरसतः स्वपदे सभावा,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१२॥

* भाष *

पानि पान थानू पनने ग्वसू ठ्वथि तिच्छूय ज़न् ,
यिथू ठ्वुथि तरन्ग अमृत सूत्य भरिथूय समन्द्रन ।
व्ययि सूत्य निवान छि सोरुय फीरिथ त्वतुय ज़न,
राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥१२॥

मेराः सदैवहिदरीषु विचित्रवाग्भि,

गायन्ति या भगवतीं परिवादिनीभिः ।

विद्याधराहि पुलकाङ्कित विग्रहाः सा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१३॥

* भाष *

न्यती समीरच्यन ग्वफन नाना प्रकार गीत,

ग्यवान छि च्ये भगवती सेतार स्वर सूत्य ।

रूमू हर्ष सान व्यध्याधर गायन करान कृत्य,

राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥१३॥

राज्ञी सदा भगवती मनसा स्मरामि ॥
राज्ञी सदा भगवती वचसा गृणामि ॥
राज्ञी सदा भगवती शरसा नमामि ॥
राज्ञी सदा भगवती शरणं प्रपद्ये ॥१७॥

* भाष *

राज्ञा द्रह्य भगवती मनू किन्य स्वरान छुस ॥
राज्ञा द्रह्य भगवती ज्यवि किन्य परान छुस ॥
राज्ञा द्रह्य भगवति कल किन्य नमान छुस ॥
राज्ञा द्रह्य भगवती आमुत शरण छुस ॥

राज्ञ्याः स्तोत्रमिदं पुण्यं यः पठेद्भक्तिमान्नरः
नित्यं देव्याः प्रसादेन शिवसायुज्यमाप्नुयात् ॥

इति श्री जगदम्बास्तुति-राजानक-विध्याधर विरचिता शुभदा सोभूयात ॥ ॥ इति शिवम् ॥

कृतज्ञता

ज्ञात होंवे कि श्री स्पामी विध्याधर जी महाराज विरचिता श्री राज्ञास्तुति की काशमीरी भाषा में जो टीका श्री महादेवजी ने की है उसके अतियुक्त सेवक ने अपनी बुद्धि अनुसार काशमीरी भाषा में अनुवाद किया है। जिसको देवनागरी भाषा में प्रकाशत किया।

इस कार्य में श्रीमान् नील कण्ठ जी सेवक श्री स्वामी विध्याधर जी का मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। स्वामी जी के सेवकूं और राज्ञा-भगवती प्रेमियों से आशा है कि अगर मेरी कोई त्रुटी रह गई हो तो क्षमा करें। (सपरू) १२-७-६५

शक्ति प्रिंटिंग प्रैस जम्मू में छपकर प्रकाशित की।